आश्रम पद्धति विद्यालय, राजकीय विद्यालय और अनुदानित विद्यालयों के छात्राओं में आत्म प्रत्यय :एक तुलनात्मक अध्ययन

–अभिलाषा त्रिपाठी
शोध छात्रा (मनोविज्ञान विभाग)
का.सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या

समाज कल्याण विभाग की स्थापना वर्ष 1955 में हुयी। सामाजिक–आर्थिक एवं अन्य स्तर से निर्धन दलित व अन्य वर्गो को कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से समाज की मुख्य धारा में लाने का दायित्व सरकार द्वारा इस विभाग को सौंपा गया। 1955 में अस्तित्व में आकर यह विभाग समय–समय पर परिवर्तित एवं परिवर्धित होकर वर्ष 1995–96 में समाज कल्याण के नाम से अस्तित्व में आया। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि इसका मूल उद्देश्य समाज के निर्धन वर्गो के हितार्थ कल्याणकारी योजनाओं को लाकर उन्हें लाभान्वित करना होता है जिससे वह एक सम्मानित नागरिक के रूप में अपना जीवन–यापन कर सकें। समाज को प्रगति एवं विकासोन्मुखी बनाने में शिक्षा की अहम भूमिका होती है। इसी को ध्यान में रखते हुए विभाग ने एक योजना बनाई। इसके अन्तर्गत आश्रम पद्धति विद्यालय की स्थापना वर्ष 1975 में की गई जिसका मुख्य उद्देश्य समाज में ऐसे निर्धन परिवारों के छात्रों को शिक्षित एवं संस्कारित करना होता है जो परिवार अपने बच्चों का भरण पोषण एवं शिक्षा दिलाने में असमर्थ होते हैं।

फिल्मर (2000)ने अनेक देशों में बच्चों की शिक्षा पर सामाजिक, आर्थिक विषमता के कुप्रभाव का एक बड़ा अध्ययन किया है। इस अध्ययन के परिणामों में उन्होंने भारत के सम्बन्ध में बताया कि लिंग भेद और विपन्नता के कारण अनेक बच्चों प्रारम्भिक स्तर तक की भी शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते। ऐसे बच्चो के लिए ही आश्रम पद्धति विद्यालय की आवश्कता थी। प्रारम्भ में ऐसे विद्यालय का स्वरूप एवं नाम गुरुकुल परम्परा की भाँति आश्रम वाले परिवेश में रहकर अनुशासित एवं व्यवस्थित ज्ञान के माध्यम से शिक्षित करना इनका लक्ष्य था, किन्तु शिक्षा का स्तर प्राथमिक स्तर तक था। वर्ष 2008–09 में इसे उच्चीकृत करते हुए प्राथमिक से उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कर दिया गया। पहले उ0प्र0 के कुछ ही जिलों में ऐसे विद्यालयों की स्थापना की गयी, किन्तु इसके महत्व को देखते हुए सरकार ने सभी जिलों मे इसकी स्थापना व संचालन आरम्भ कर दिया। वर्तमान में कुल 94 आश्रम पद्धति विद्यालय उ0प्र0 में संचालित हो रहे हैं। वर्ष 2015–16 में सरकार ने नवोदय के पैटर्न को आत्मसात् करते हुए इन विद्यालयों से प्राथमिक स्तर को समाप्त कर कक्षा–6 से 12 तक की शिक्षा देने की व्यवस्था की।

आश्रम पद्धति विद्यालय पूर्णतः अवासीय होते हैं जिनमे विद्यार्थियों को 24 घंटे विद्यालय मे ही रहना होता है। "A healthy mind live in healthy body"-इसी परिकल्पना के आधार पर ऐसे विद्यालयों में आवासित छात्रों को भोजन एवं नाश्ता समयानुसार प्रदान किया जाता है। विद्यार्थियों को यूनिफार्म अन्य उपयोग के कपड़े तथा अन्य दैनिक आवश्यकता की वस्तुऐं निःशुल्क विद्यालय से ही प्राप्त होती हैं।

हम सभी अवगत हैं कि प्रदेश मे माध्यमिक स्तर के विद्यालयों मे अधिकांश या तो राजकीय हैं या प्राइवेट लेकिन सरकार से अनुदानित हैं। आश्रम पद्धति विद्यालय के विषय मे ऊपर जो बातें बतलायी गई हैं उनसे स्पष्ट है कि ये विद्यालय राजकीय और अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों से अनेक प्रकार से भिन्न हैं इस भिन्नता को तालिका के रूप मे तालिका सं0 1 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका सं0 1:

आश्रम पद्धति विद्यालयों की राजकीय तथा अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों से भिन्नता

आश्रम पद्धति विद्यालय	राजकीय और अनुदानित माध्यमिक विद्यालय
1. इस विद्यालय में उन्हीं बच्चों को प्रवेशित किया जाता है जो गरीबी रेखा से नीचे (बी0पी0एल0) संवर्ग में आते हैं।	इन विद्यालयो मे सभी वर्गो के छात्रों का प्रवेश लिया जाता है जिसमे समाजिक एवं आर्थिक वर्गीकरण की कोई भूमिका नहीं होती।
2. ये विद्यालय पूर्णतः आवासीय होते हैं ।	ये विद्यालय आवासीय नहीं होते हैं।
3. इस विद्यालय में 60 प्रतिशत अनुसूचित जाति से, 25 प्रतिशत पिछड़ी जाति से, 15 प्रतिशत सामान्य जाति के छात्राओं को प्रवेश प्रक्रिया के माध्यम से चयनित किया जाता है।	इन विद्यालयों मे आवश्यकतानुरूप विद्यार्थियों के प्रवेश में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओ.बी.सी.), अनुसूचित जाति वर्ग (एस.सी.) के लिए आरक्षण की संवैधानिक व्यवस्थाओं का पालन किया जाता है।
4. इस विद्यालय मे कक्षा का स्तर 6 से 12 का होता है।	इसमे कक्षा का स्तर पूर्व माध्यमिक अथवा माध्यमिक दोनो हो सकता है।
5. छात्र छात्राओं को शिक्षा, भोजन, आवासीय व्यवस्था आदि सभी का खर्च उ0प्र0 सरकार का समाज कल्याण विभाग द्वारा वहन किया जाता है।	इन संस्थाओ मे छात्र छात्राओं को ऐसी कोई सुविधा उपलब्ध नहीं होती है।
6. इस विद्यालय का प्रबंधन व नियन्त्रण मुख्य रूप से समाज कल्याण विभाग द्वारा किया जाता है।	राजकीय विद्यालयों का संचालन और प्रबन्धन सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा होता है जबकि अनुदानित माध्यमिक विद्यालय प्राइवेट होते हैं लेकिन सरकार से अनुदानित होते हैं। इनके प्रबन्धन के लिए हर विद्यालय की अपनी प्रबन्ध समिति होती है।

यहाँ एक जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि आश्रम पद्धति विद्यालय के विद्यार्थी अपने अध्ययन के माध्यम से क्या अपने व्यक्तित्व का विकास उस स्तर तक कर पाते हैं, जिस स्तर तक राजकीय और अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का होता है? कैलिगुरी (1966)ने अपने एक अध्ययन के निष्कर्षो के आधार पर मत व्यक्त किया था कि निर्धन बच्चे जिस

वन्चनायुक्त परिवेश मे पलते हैं उसका उनके आत्म प्रत्यय जैसे व्यक्तित्व के विभिन्न शीलगुणों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ऐसा ही मत पोर्टिलो (2008) ने भी अपने लेख मे प्रस्तुत किया था। आश्रम पद्धति विद्यालय मे गरीब घरो के बच्चे पढ़ते हैं इसलिए उनके माध्यमिक स्तर तक पहुँचने पर शिक्षा के प्रभाव से उनमें आत्मप्रत्यय की तुलना राजकीय और माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में आत्मप्रत्यय से उपयोगी जानकारी दे सकता है।

इस सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष में वर्तमान अध्ययन प्रस्तावित है इस अध्ययन का उद्देश्य है : **आश्रम पद्धति विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय की राजकीय और अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियो से तुलना करना।**

परिकल्पना – विद्यालय के स्वरूप में भिन्नता (आश्रम पद्धति विद्यालय, राजकीय और अनुदानित माध्यमिक विद्यालय) होने पर अध्ययनरत छात्रों के आत्मप्रत्यय के स्वरूप में अन्तर पाया जायेगा।

विधि–

प्रतिदर्श – प्रस्तावित अध्ययन में कक्षा के कुल 480 छात्राओं पर अध्ययन किया गया है, जिसमें 160 छात्रायें आश्रम पद्धति विद्यालय की, 160 छात्रायें राजकीय विद्यालय की एवं 160 छात्रायें अनुदानित विद्यालयों की थी।

मापनी –प्रस्तुत अध्ययन में आर0के0 सारस्वत (2005) द्वारा बनायी गयी आत्म प्रत्यय मापनी को प्रयोग में लिया गया, जिसमें कुल 48 पद हैं। इस मापनी से आत्मप्रत्यय की 6 विमाओं का मापन होता है जिनके नाम है, 1–भौतिक आत्म प्रत्यय, 2–सामाजिक आत्म प्रत्यय, 3– स्वभावगत आत्म प्रत्यय, 4–शैक्षिक आत्म प्रत्यय, 5–नैतिक आत्म प्रत्यय, 6–बौद्धिक आत्म प्रत्यय। इन विमाओं के अलग अलग प्राप्ताकों के साथ इनके योग से समग्र आत्म प्रत्यय का भी एक प्राप्तांक प्राप्त होता है।

परिणाम और व्याख्या–

आत्म प्रत्यय मापनी की सहायता से प्रतिदर्श के सूचनादाताओं से प्रदत्त संग्रहण किया गया। इससे प्राप्त प्रदत्तों का संख्यिकीय विश्लेषण किया गया। अध्ययन का उद्देश्य तीन प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों में आत्म प्रत्यय के स्तर की तुलना करना था। इसके लिये एक दिशीय प्रसरण विश्लेषण (वन वे अनोवा) विधि का उपयेाग करना उचित था। इससे सम्बन्धित सांख्यिकीय मूल्य तालिका सं0 2 में प्रस्तुत है।

TABLE-2

आत्मप्रत्यय के आधार पर विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों में भिन्नता परीक्षण।

क्रम संख्या	आत्मप्रत्यय	आश्रम मध्यमान प्रा0वि	राजकीय मध्यमान प्रा0वि	अनुदानित मध्यमान प्रा0वि	F मूल्य
1	भौतिक आत्मप्रत्यय	31.89 4.31	31.18 3.73	31.03 3.92	2.15*
2	सामाजिक आत्मप्रत्यय	28.51 4.28	27.39 4.26	28.51 3.91	3.82*

3	स्वभावगत आत्मप्रत्यय	32.77 3.68	30.41 5.35	31.71 3.99	11.51***
4	शैक्षिक आत्मप्रत्यय	34.58 3.69	32.92 3.95	31.52 4.57	22.30***
5	नैतिक आत्मप्रत्यय	32.01 3.53	31.17 3.61	32.30 3.92	4.10*
6	बौद्धिक आत्मप्रत्यय	29.09 4.06	27.88 4.19	30.06 4.56	10.40***
7	सम्पूर्ण आत्मप्रत्यय	188.84 15.15	180.96 16.51	185.13 12.64	11.270***

*Þ>.05, ***Þ>.001

तालिका 2 के सहज अवलोकन से ज्ञात होता है कि तीनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय और उसकी विमाओं के आधार पर सार्थक भिन्नता थी। इन तुलना से सम्बन्धित सभी F मूल्य कम या अधिक सार्थक पाये गये। भौतिक, सामाजिक और नैतिक आत्मप्रत्यय की दृष्टि से अन्तर .05 स्तर पर सार्थक थे जबकि स्वभावगत, शैक्षिक, बौद्धिक और सम्पूर्ण आत्मप्रत्यय के लिये अन्तर .001 स्तर पर सार्थक पाये गये। इस आधार पर कह सकते है कि अन्तरों से सम्बन्धित F मूल्यों की सार्थकता से अध्ययन के लिये प्रस्तावित परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है किन्तु इसे मानते हुए थोड़ी सावधानी की जरूरत है। वस्तुतः भिन्नता की यह परिकल्पना इस मान्यता पर आधारित थी कि आश्रम पद्धति विद्यालय के विद्यार्थी निर्धन और समाज के पिछड़े वर्ग से आते हैं, इसलिये उनमें आत्मप्रत्यय राजकीय और अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में कम होगा। जैसा कि पहले भी उल्लिखित है कि कई अध्ययनों में निर्धनता का आत्मप्रत्यय पर प्रतिकूल प्रभाव पाया गया **(पोर्टिलो 2008)**। तालिका 2 के मध्यमान प्राप्तांक इसके विपरीत है। आत्मप्रत्यय के सभी विमाओं और सम्पूर्ण आत्मप्रत्यय के लिये आश्रम पद्धति विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्यमान, प्राप्तांक राजकीय और अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्यमान प्राप्तांक से अधिक है। इससे प्रतीत होता है कि आश्रम पद्धति विद्यालय के विद्यार्थियों का आत्मप्रत्यय अन्य दोनों विद्यालयों की तुलना में अपेक्षाकृत उच्च स्तर का है। अतः कह सकते हैं कि भिन्नता की परिकल्पना तो सिद्ध हुई, किन्तु भिन्नता परिकल्पित आधार पर नहीं है।

आत्मप्रत्यय सम्बन्धी इन परिणामों को समझने के क्रम में ऐसा अनुभव होता है कि वे बच्चे जो निर्धन परिवार के थे और जिनके आत्मप्रत्यय शायद उस स्तर का न रहा हो जितना राजकीय और अनुदानित विद्यालयों में पढ़ने वाले अपेक्षाकृत अधिक सुविधा सम्पन्न परिवारों के बच्चों का रहा हो, आश्रम पद्धति विद्यालयों की सुविधा और सहवासीय व्यवस्था में अध्ययन से उनमें आत्म प्रत्यय बढ़ा हो और अन्य दो विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक हो गया हो। इस तरह का वैकल्पिक मत किसी अन्य अध्ययन से ही पुष्ट हो सकता है।

प्राप्त परणिाम इस दृष्टिकोण से उत्साहवर्धक हैं कि इससे ज्ञात होता है कि अभावग्रस्त परिवारों के बच्चों को योजनाबद्ध तरीके से शिक्षा देकर उनमें आवश्यक उत्तम विकास किया जा सकता है। आश्रम पद्यपि विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय में तेज वृद्धि इन विद्यालयों की उपादेयता पुष्ट करती है। यह भी ध्यान देने की बात है कि आत्मप्रत्यय का विद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धि पर बड़ा धनात्मक प्रभाव पड़ता है।

सबीहा डूले(2017) ने आत्म प्रत्यय का शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले का अध्ययन किया है और पाया है कि आत्म प्रत्यय का शैक्षणिक उपलब्धि पर धनात्मक प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार से **श्वान–चैंग, श्नाइडर एवं मैक कार्टे** (2007) ने अध्ययन के आधार पर बताया कि आत्म प्रत्यय शैक्षणिक उपलब्धि से पूर्णतः बधा हुआ है और यह तर्क दिया कि शैक्षिक क्रियाकलापों से ही आत्म प्रत्यय जुड़ा नहीं होता है, अपितु यह वर्तमान ज्ञान को भी परिलक्षित करता है।

निष्कर्ष–

वर्तमान अध्ययन ने यह पुष्ट किया है कि निर्धन तथा समाज के पिछड़े वर्ग के बच्चों को आवश्यक अध्ययन की सुविधा देकर और उनकी अन्य तरीके से देखभाल करके उनके आत्मप्रत्यय में सुधार किया जा सकता है। इससे वे हीन भावना से बचेंगें और विकास की मुख्य धारा में उत्साह से आगे बढ़ेगें। इन अध्ययन से आश्रम पद्धति विद्यालयों की सफलता की भी पुष्टि हुई।

सन्दर्भ सूची–

1- Batool, A.; "Ajmal, A.; Abid, S. and Iqbal, H (2018). Self Concept and Self Esteem among Adults, Peshawar Journal of Psychology and Behaviour Sciences 4, (2), pp237-246.
2- Bong, M., & Clark, R.E. (1999).Comparison between Self-Concept and Efficacy in Academic Motivation Research. Educational Psychologist, 34(3),139-153.
3- Caliguri, J. (1966). The Self Concept of the Poverty Child . The Journal of Negro Education, 35 (3), pp 280-282.
4- Duley, S. (2017). The Effect of Self Concept on Student Achievement. In Karadog E. (eds) The factors affecting student achievement cham springer.
5- Filmer, D. (2000). The Structure of Social Disparities in Education: Gender and weath. Policy Research Paper Number 2268. Washington, DC.@ Word Bank.
6- Portillo, C.T. (2008), Poverty, Self Concept and Health: Experience of Latinas Refrived from http:// doi.org/101300, pp 229-242.
7- Sebastian C.L.; Heys, S.B.&Blakemore, S.J.(2008). Development of the Self Concept during Adolescent Trends in Cognitive Sciences, 12 (11), pp 441-446